# क्या बताती हैं हमें लोक-कथायें ?

❑ कमलेश चन्द्र जोशी

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा-विकास के लिए लोक कथाएं काफी महत्वपूर्ण होती हैं । इन्हें सुनने में बच्चे कौतुहल, कल्पनाशीलता और वर्णनात्मकता को लेकर सक्रिय रहते हैं । लेकिन शैक्षणिक प्रयोग के संदर्भ में लोककथाओं की कुछ सीमाएं भी हैं । अतीत का एक पक्षीय वर्णन, रूढ़ कथा-विन्यास, पतनशील मूल्य और तार्किक असंगति जैसी कमजोरियां भी इन कथाओं में पायी जाती हैं । लोककथाओं के चयन एवं प्रस्तुतीकरण में सजगता बदलते हुए इनका सार्थक प्रयोग किया जा सकता है ।

लोक-कथायें हमारे आम जीवन में सदियों से रची बसी हैं। इन्हें हम अपने बड़े बूढ़ों से बचपन से ही सुनते रहे हैं । लोक-कथाओं के बारे में यह भी कहा जाता है कि बचपन के शुरूआती वर्षों में बच्चों को अपने परिवेश की महक व सोच, कल्पना की उडान देने के लिए इनका उपयोग जरूरी है । हम यह भी सुनते हैं कि बच्चों के भाषा विकास के सन्दर्भ में इन कथाओं की उपयोगिता महत्वपूर्ण है । ऐसा इसलिए कहा जाता है कि इन लोककथाओं के विभिन्न रूपों में हमें लोक जीवन के तत्व मिलते हैं जो बच्चों के भाषा-विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं । अगर हम अपनी पढ़ी हुई लोक कथाओं को याद करें तो सबसे पहले हमें इनके कई रूप मिलते हैं । कुछ लोक-कथाओं में हमें देखने को मिलता है कि इनमें कई तरह के वाक्यों का दोहराव होता है । इसका एक उदाहरण देखें - एक चिड़िया को पेड के कोटर में एक गेहूं का दाना मिलता है । उस दाने को निकालने के लिए वह चिडिया बढ़ई, लोहार, राजा आदि कई लोगों के पास जाती है । उसके साथ खास बात यह होती है कि जिसके पास वह जाती है, वह अपने साथ पहले घटी हुई घटना को जरूर बताती है । इस तरह ऐसी कथाओं को अगर हम बच्चों के साथ जोड़ कर देखें कि जब हम ऐसी कहानी उन्हें सुना रहे होते हैं तब बच्चों से हमारी यह अपेक्षा रहती है कि पहले घटी उस घटना को जरूर दोहरायें । इस सुनाने की प्रक्रिया में हमें यह महसूस होता है कि बच्चे भी घटना को याद रखते हुए साथ-साथ दोहराते हैं और हमें बताते चलते हैं। इस तरह कथा सुनाने की इस प्रक्रिया में हमें यह महसूस होता है कि बच्चे भी घटना को याद रखते हुए साथ-साथ दोहराते हैं ओर हमें बताते चलते हैं । इस तरह कथा सुनाने की इस प्रक्रिया में बच्चे भी घटी घटनाओं को एक क्रम में रखकर देखते हैं । इन क्रमिक घटनाओं में एक तर्क होता है जो बच्चों के मनोभावों से मिलता-जुलता है ।

इस चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए हम तीन लोक कथाओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे । इनमें पहली मलयालम लोक कथा है - 'ईचापूचा', दूसरी मराठी लोक कथा है - 'एक्की दोक्की' तथा तीसरी मणिपुरी लोक कथा है - 'कौन बनेगा निंगथऊ' । ये तीनों लोक कथाएं, तीन अलग चित्रात्मक बाल पुस्तकों के रूप में तूलिका पब्लिशर्स, चेन्नई से प्रकाशित हुई हैं ।

पहले हम मलयालम लोक कथा 'ईचा पूचा' पर बातचीत करें - इस कथा में सबसे पहले यह जानना आवश्यक होगा कि मलयालम में मक्खी कोईचा तथा बिल्ली को पूचा कहते हैं । यह लोक-कथा एक मक्खी और बिल्ली के बारे में है । वे दोनों दोस्त होते हैं और एक दिन कंजी बनाते हैं । लेकिन उसे खाने के लिए उनके पास कोई चम्मच नहीं होती है । तब ईचा कहती है कि, ''पूचा तुम कंजी की रखवाली करो । मैं अभी कटहल का पत्ता लेकर आती हूं ।'' और ईचा उड़ जाती है । पूचा ने कंजी की रखवाली का वचन तो दे दिया लेकिन कंजी की रखवाली करते-करते उसकी भूख बढ़ जाती है । और वह सारी की सारी कंजी पी जाती है जिससे उसका पेट फूल जाता है । इस तरह का वर्णन बच्चों के मनोभावों से खूब मेल खाता है। वे इसमें आनन्द भी लेते हैं । दूसरी बात यह भी गौर करने की है कि इस तरह की कहानी केवल मलयालम में ही नहीं है । ऐसी कई कहानियां हमारी अन्य भाषाओं व बोलियों में भी विद्यमान हैं । चाहे उसके पात्रों में थोड़ा बदलाव जरूर रहा हो लेकिन मूल बात एक-सी ही होती है ।

वापिस फिर हम कहानी पर लौटें तो हम पाते हैं, पूचा का पेट इतना फूल गया कि उसका चलना मुश्किल हो गया और अब वह धीरे धीरे चल पाती थी । यहां पेट फूलने वाली घटना पर गौर करें तो हम पायेंगे कि यह एक ऐसा बिन्दु है जो बच्चों की कल्पनाओं से खूब जुड़ता है। इस तरह का पाठ व ऐसे चित्र भी बच्चे खूब पसंद करते हैं । इस जगह पर उन्हें अपनी कल्पना व तर्क गढ़ने के खूब मौके मिलते हैं कि उसका पेट कितना फूला होगा ? जिससे उसका चलना ही मुश्किल हो गया होगा । साथ में यह भी कि वह कैसे चल पाती होगी ? यह बच्चों के लिए लोक-कथा का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है जो बच्चों को अपनी तरह से सोचने के काफी मौके देता है । इसके साथ आगे की कहानी में यह होता है कि पूचा अपना फूला पेट कम करने के बारे में अपने आसपास के लोगों से

पूछताछ करती है । सबसे पहले उसे छप्पर में बंधी गाय मिलती है। वह उससे पूछती है । गाय कहती है, ''मेरी देखभाल करने वाले लड़के से पूछो'' । इस तरह से कहानी आगे बढ़ती रहती है । फिर लड़का कहता है, ''मुझे नहीं मालूम मेरी छड़ी से पूछो'। छड़ी कहती है, ''पेड़ से पूछो'' । पेड़ कहता है, ''पक्षी से'' । फिर पक्षी कहता है, ''शिकारी से'' । और शिकारी कहता है, ''मेरे चाकू से''। चाकू गुस्साकर कहता है, ''अभी बताता हूं कि कैसे ठीक होगा तेरा पेट ।'' और पूचा भाग जाती है। भागकर वह ईचा के पास पहुंचती है । उसका पेट अपने आप ही ठीक हो जाता है। और कहानी समाप्त हो जाती है ।

इस पूरे घटनाक्रम में कुछ बातें नोट करने की हैं । पहली बात यह कि इसमें जुड़ी सारी चीजें बच्चों के आसपास के वातावरण को सामने उपस्थित रखती है और उनका आपसी संबंध भी हमें बताती है। इससे हमारी समझ बनती है कि बच्चों के लिए अपने आसपास के परिवेश में जोड़ते हुए सहज रूप से एक कहानी की रचना कैसे हो सकती है ? इसके अलावा उक्त संदर्भों से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस तरह की लोक-कथाओं के अन्त में कोई उपदेश नहीं निकलता जो कि बच्चों के लिए कोई जरूरी भी नहीं है । हम बच्चों के लिए कहानी की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण मानते हैं । जहां बच्चे को खुशी मिले तथा वे अपनी दुनिया रच सकें । ऐसी कहानियों में यह भी संभावना नजर आती है कि अगर इस कहानी को समाप्त न करें तो बच्चे भी इसे खुद बढ़ा सकते हैं । खुद बढ़ाने में बच्चों का तर्क भी समाहित रहेगा और हर बच्चे का अपना तर्क होगा । यह एक महत्वपूर्ण बात है । कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि इस प्रकार की वर्णानात्मक लोक कथायें बच्चों के भाषा विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । इसके साथ ही उन्हें घटनाओं का दोहराव भी अच्छा लगता है । यह दोहराव उन्हें कहानी सुनने के लिए प्रेरित करता है। इसको हम ठीक उसी तरह देख सकते हैं जैसे बच्चों की कविताओं में लय व तुक का महत्व होता है । वहां यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होता कि इस लय व तुक का क्या अर्थ निकलता है ।

अब एक दूसरे प्रकार की लोक-कथा को देखें । जहां उपदेश एक 'छुपे संदेश' के रूप में प्रयुक्त है । यह एक मराठी लोक कथा है - ''एक्की दोक्की'' । यह कहानी एक केशवाली और दो केशवाली बहनों यानि कि एक्की और दोक्की की है । एक्की के सिर पर एक बाल है । दोक्की के सिर पर दो बाल हैं । इसलिए दोक्की घमण्डी है । उसकी मॉ सोचती है कि दोक्की बहुत सुंदर है। दोक्की इसलिए अपनी बहन पर रोब भी जमाती रहती है । एक दिन एक्की इतनी तंग आ गई कि वह घर से भाग गई । यहां पर पहली बात यह समझ में आती है कि कहानी समाज में इस मिथक को लेकर आगे बढ़ती है कि घने बालों वाली लड़कियां ज्यादा सुंदर होती हैं और घमण्डी भी । इस कहानी की कथा हमारे जेहन में एक तरह की 'स्टीरियो टाइप' समझ बनाती है ।

इसके साथ हमारी यह समझ भी बनती है कि बच्चों के साथ उपयोग करने के लिए हम किस तरह की लोककथाओं का उपयोग करें ? आगे जब वह जंगल में पहुंचती है तो मेंहदी की झाड़ी चिल्लाती है, ''मुझे पानी पिला दो''। तब एक्की उसे पानी पिलाती है । मेंहदी की झाड़ी उसे धन्यवाद देती है । और कहती है, ''मैं तुम्हारी यह मदद याद रखूंगी'' । एक्की आगे बढ़ जाती है । फिर उसे एक मरियल-सी गाय मिलती है । वह भूखी है । गाय कहती है, ''मुझे भूख लगी है खाना खिला दो।'' तब एक्की जंगल से घास-चारा इकट्ठा कर उसे खिलाती है। गाय भी उसे धन्यवाद देती है और वह भी कहती है, ''मैं तुम्हारी मदद याद रखूंगी''। इस तरह कहानी आगे बढ़ती है।

यहां यह बात भी समझने की है हमारे लिए यहां कहानी का एक ढांचा स्पष्ट होता है । हम मन ही मन अनुमान लगाते हैं कि अभी बाद में यह सब एक्की की मदद करेंगे । ऐसा पूर्वानुमान इसलिए लगाते हैं क्योंकि ऐसी लोक कथाएं हम बहुत पढ़ते रहे हैं। लेकिन बच्चे इस पर कितना सोच पाते हैं ? यह उनके साथ काम करते हुए समझा जा सकता है । लेकिन इस तरह की बात हमारे वास्तविक जीवन में नहीं होती है। हम यहां पर ऐसा कह सकते हैं कि इस तरह की कथाएं पढ़ने वाले के लिए एक 'सैट पैटर्न' रचती है जिसमें सब कुछ स्थिर लगता है। थोड़ा बच्चों के संदर्भ में भी इसे स्पष्ट करें कि ऐसी कथायें उनके सोचने के लिए बहुत 'ओपन स्पेस' नहीं देती हैं । इसलिए ऐसी कथाएं एक बंधी हुई लोक-कथा प्रतीत होती है । इसमें बच्चों का अपना तर्क और उनकी कल्पना इतनी मुखर नहीं हो पाती हैं और वे इसके तथ्यों में बहुत आनन्द नहीं ले पाते । ऐसी कथाएं बच्चों को एक ही धरातल पर सोचने को मजबूर करती हैं । उन्हें सोचने की नई राहें नहीं सुझाती । इनका अंत यह होता है कि '.... अंत में खुशी-खुशी रहने लगे ।' यहां पर यह स्पष्ट करने की जरूरत है कि बच्चों के लिए खुशी उन्हें अच्छा लगने वाली होती है क्योंकि वे अपने परिवेश में रहते हुए तमाम पत्र-पत्रिकाओं में इस तरह की कहानियां पढ़ते व सुनते हैं। वे इसके इतर कोई नई चीज सोच नहीं पाते । कुल मिलाकर ऐसी कहानियां बच्चों में एक कंडीशनिंग कर देती हैं । ऐसा हमें कभी-कभी महसूस होता है कि जब हम बच्चों का स्वयं का लिखा हुआ पढ़ते हैं, तब हमें बच्चों को विविध तरह की सामग्री मुहैय्या करना जरूरी लगता है । ऐसी सामग्री जिसमें बच्चों के लिए विभिन्न तरह की कल्पना व सोच उपस्थित हो। इसके साथ ही कुछ ऐसी सामग्री भी हो जो उन्हें स्वयं भी नई-नई चीजों पर सोचने के मौके दे जिसके अन्तर्गत उन्हें विभिन्न चीजों व अपने अनुभवों पर सोचने का मौका मिल सके

और उनके सोचने के विविध आयाम खुल सकें ।

अब हम तीसरी लोक-कथा ''कौन बनेगा निंगथऊ'' पर चर्चा करें । यह एक मणिपुरी लोक कथा है । यह लोक कथा हमें राजा-रानियों के किस्सों की याद दिलाती है । ऐसी कहानियां भी हम पढ़ते रहे हैं कि एक राजा रानी होते हैं । पहले उनके कोई बच्चा नहीं होता है । उनके राज्य में उनके शासन से प्रजा भी सुखी रहती हैं । उनके बच्चे नहीं होते । तब राजा की प्रजा जो अपने राजा को बहुत चाहती है वह ईश्वर से प्रार्थना करती है । तब उनके तीन बेटे होते हैं - सान जाईवबा, सान याईमा और सान तोम्बा । और फिर बारह साल बाद एक लड़की भी होती है - साना तोम्बी । धीरे-धीरे राजा रानी बूढे हो जाते हैं और उन्हें यह चिन्ता सताने लगती है कि आगे उनका राज्य कौन संभालेगा ? इसी के इर्द गिर्द कहानी का ताना बाना बुना गया है । राज्य में एक प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिसमें सभी राजकुमार अपनी श्रेष्ठता का प्रर्दशन करते हैं - अधिकतर अपनी वीरता का । ऐसी कथाओं में इस तरह के मिथ खूब होते हैं कि उनके बारह साल बाद लड़की हुई या उन्होंने फूल तोड़ा तो राजकुमार या राजकुमारी बन गई । ऐसी कहानियों में राजा रानियों को काफी ईमानदार दिखाया जाता है और राजगद्दी के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में हमेशा सबसे छोटे की ही जीत होती है । इस कहानी में बेटी साना तोम्बी को अगला राजा चुना जाता है क्योंकि वह करुणामयी थी । उसने अपने राज्य में पक्षियों, जानवरों और पेड-पौधों का भी ध्यान रखा था । जबकि राजकुमारों ने अपनी वीरता का ही प्रदर्शन किया । इन कथाओं में हमें यह देखने को मिलता है कि वीरता या बहादुरी से ज्यादा महत्वपूर्ण करूणा या बुद्धि को माना जाता है । इस तरह की मूल भावना छिपी रहती है । यहां पर हम यह कह सकते हैं कि ये छिपे रूप में हमारी संस्कृति व जीवन मूल्यों का परिचय देती हैं। ऐसी कहानियों का अंत भी सुखान्त ही होता है ।

इस कहानी को अगर हम समाप्त न करें, बीच में अधूरा छोड़ें तो यह बच्चों के तर्क के लिए महत्वपूर्ण बन सकती है। जैसे कि तीनों राजकुमार साना जाईबा, साना याईमा और साना तोम्बा क्रमश: पेड को भेद कर कूदने वाले, पेड के ऊपर से छलांग लगाने वाला व पेड को उखाडने वाले होते हैं । इस पर हम बच्चों से पूछ सकते हैं कि अब तुम्हीं फैसला करो कि अब किसे राजा बनाना चाहिये? ऐसे प्रश्नों से हम कहानी को खोल सकते हैं । जो बच्चों को सोचने का मौका देती है । आखिर में, हमें इस पूरी कहानी के बारे में सोच बनानी है तो हम कह सकते हैं कि यह हमारे परिवेश के प्राचीन समय को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है । उनका स्थानीय इतिहास सामने आता है । लेकिन यहां हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हमें यह इतिहास एक ही नजरिये से ही बताया गया होता है । अधिकतर कथाएं राजा-रानी केन्द्रित ही रहती हैं । इसमें दूसरा पक्ष अपनी ''पैसिव'' भूमिका में रहता है जैसा कि बहुत-सी कहानियों में देखने को मिलता है । जनपक्षीय बात यदा-कदा ही नजर आती है । हालांकि इस कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं है ।

इन कहानियों में कुछ मूल्य होते हैं जैसे आदर, इज्जत, सम्मान, सच आदि । इन मूल्यों को लेकर इन्हें बुना गया होता है। लेकिन अगर इन कहानियों में कुछ खोजा जाये तो और भी बेहतरीन चीजें भी निकल सकती हैं उनसे भी हम कुछ नई बातें निकाल सकते हैं। ऐसी कथाओं की पहचान की जानी चाहिए । कुल मिलाकर यहां पर यह बात स्पष्ट है कि इस तरह की कथाओं में एक आग्रह नजर आता है । जो बच्चों के मन में एक खुशी, शांति तथा पढ़ने का सुख दे सकता है लेकिन उन्हें बहुत दूर तक सोचने व तर्क सम्मत निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित नहीं कर सकता। अंत में हमारी लोक कथाओं के बारे में यह समझ बनती है कि लोक कथाओं के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं । प्रश्न यह उठता है कि हम बच्चों के साथ काम करते हुए किस तरह की कथाओं को उपयोग में लायें ? जो बच्चों के स्वस्थ्य मनोरंजन के साथ उनकी कल्पना और सोच को भी विस्तार दें । यह महत्वपूर्ण बात लगती है । ऐसा कहा जाता है कि लोक कथाएं पुराने मूल्यों को ही उजागर करती हैं और इसके साथ एक 'स्टीरियों टाईप' भी रचती हैं । जहां कभी कभी बच्चे भ्रम में भी पड़ जाते हैं कि अरे, यह कैसे हो गया ? हालांकि हमें लगता है कि बच्चे भ्रम की स्थिति में भी सीखते हैं । अपना तर्क रखने की कोशिश करते हैं । यह जरूरी इसलिए भी लगता है क्योंकि हम मानते हैं कि बच्चा बहुत तर्कशील व कल्पनाशील होता है । लेकिन इस बात की स्पष्टता होनी चाहिए कि कथा इसमें क्या बताना चाह रही है ? इसे क्यों गढ़ा गया है ? क्या भ्रम की स्थिति ऐसी है कि बच्चा अपना तर्क नहीं रख पायेगा? यहां पर जरूरी होता है कि कथा इस तरह से रची गई हो, जहां बच्चा अपना तर्क रख पाये यानि कि कथा में उसे तर्क रखने में मदद मिले। ऐसा न हो कि बच्चा कुछ सोच ही न पाये; आदि बातें ।

जब बच्चों को हम स्वतंत्र रूप से सोचने वाला बनाना चाहते हैं तो हमें उनकी सामग्री पर भी काफी ध्यान रखना पड़ता है । नहीं, तो, बच्चे में भी एक तरह की चीजों की 'इमेज' सी बन जाती है जो बाद में उनके लेखन व सोच में व्याप्त रहती है । इसलिए हम कहते हैं कि बच्चों के लिए विभिन्न तरह की सामग्री तो उपलब्ध हो लेकिन बच्चों को ध्यान में रखते हुए । इस बात को कहने में कोई हर्ज नहीं कि बच्चों के शुरूआती स्कूली दिनों में भाषा विकास के लिए इनका उपयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसे हमें अपने शिक्षण में उपयोग करना चाहिये और बच्चों को इस तरह की सामग्री से परिचित कराना चाहिये । ◆